International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in January 2024, ISSN -2393-8048

गणेश पुराण का सांस्कृतिक अध्ययन एवं इसका योगदान

शिखा जोशी, शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ. ममता गुप्ता, सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

प्रस्तावित शोध की भूमिका

भारतीय जीवन–धारा में जिन ग्रन्थों का महत्वपूर्ण स्थान है उनमें पुराण भक्ति ग्रन्थों के रूप में बहुत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। पुराण साहित्य भारतीय जीवन के उत्कर्ष और उपकर्ष की अनेक गाथाएँ मिलती है। कर्मकाण्ड से ज्ञान की ओर आते हुए भारतीय मानस चिंतन के बाद भक्ति की अविरल धारा प्रवाहित हुई है। विकास की इसी प्रक्रिया में बहुदेववाद और निर्गुण ब्रह्म की स्वरूपात्मक व्याख्या से धीरे–धीरे मानस अवतारवाद या सगुण भक्ति की ओर प्रेरित हुआ।

अठारह पुराणों में अलग–अलग देवी–देवताओं को केन्द्र मानकर पाप और पुण्य, धर्म और अधर्म, कर्म और अकर्म की गाथाएँ कही गई हैं। गणेश पुराण, के साथ मुद्गल पुराण, ब्रह्म पुराण और ब्रह्माण्ड पुराण , चार पुराण शैली के विश्वकोश में से एक है जो गणेश से संबंधित है। चार ग्रंथ, दो उप पुराण और दो महा–पुराण, उनके ध्यान में भिन्न हैं। ब्रह्माण्ड पुराण गणेश को सगुण (गुण और भौतिक रूप के साथ) के रूप में प्रस्तुत करते हैं, ब्रह्म पुराण गणेश को निर्गुण (गुण, अमूर्त सिद्धांत के बिना) के रूप में प्रस्तुत करते हैं, गणेश पुराण उन्हें सगुण और निर्गुण अवधारणा के मिलन के रूप में प्रस्तुत करते हैं जिसमें सगुण गणेश निर्गुण होने का प्रस्ताव है। पुराण साहित्य सामान्यतया सगुण भक्ति का प्रतिपादन करता है। यहीं आकर हमें यह भी मालूम होता है कि सृष्टि के रहस्यों के विषय में भारतीय मनीषियों ने कितना चिंतन और मनन किया है। गणेश, और मुद्गला पुराण में गणेश को सम्योग (पूर्ण वास्तविकता और आत्मा के साथ अमूर्त संश्लेषण) के रूप में वर्णित किया गया है। देवता एक भाव संज्ञा भी है और आस्था का आधार भी इसलिए वह हमारे लिए अनिवार्य है और यह पुराण उन्हीं के लिए है जिनके लिए यह अनिवार्य है।[1]

1. डॉ0 विनय, प्रतिलिपि कहानियों की दुनिया

गणेश पुराण विशेष रूप से गणपति के लिए एक महत्वपूर्ण पाठ है, जो गणेश को अपना प्राथमिक देवता मानते हैं। निरन्तर द्वन्द्व और निरन्तर द्वन्द्व से मुक्ति का प्रयास मनुष्य की संस्कृति का मूल आधार है। पुराण हमें आधार देते है। इसी उद्देश्य को लेकर पाठकों की रूचि के अनुसार सरल, सहज भाषा में प्रस्तुत है पुराण–साहित्य की श्रृंखला में उपपुराण 'गणेश पुराण'।

भारतीय जीवन–धारा में जिन ग्रंथों का महत्वपूर्ण स्थान है उनमें पुराण भक्ति ग्रंथों के रूप में बहुत महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। पुराण–साहित्य भारतीय जीवन औ साहित्य की अक्षुण्य निधि है। इनमें मानव जीवन के उत्कर्ष और अपकर्ष की अेक गाथाएं मिलती हैं। भारतीय चिंतन–परम्परा में कर्मकाण्ड युग, उपनिषद् युग अर्थात् ज्ञान युग और पुराण युग अर्थात् भक्ति युग का निरन्तर विकास होता हुआ दिखाई देता है। कर्मकाण्ड से ज्ञान की ओर आते हुए भारतीय मानस चिंतन के ऊर्ध्व शिखर पर पंहुचा और ज्ञानात्मक चिंतन के बाद भक्ति की अविरल धारा प्रवाहित हुई। किसी भी पूजा–अर्चना या शुभ कार्य को सम्पन्न कराने से पूर्व गणेश जी की आराधना की जाती है। यह गणेश पुराण अति पूजनीय है। इसके पठन–पाठन से सब कार्य सफल हो जाते हैं।

प्रस्तावित शोध के सोपान

बहुत प्राचीन समय की बात है कि एक बार नैमिशारण्य में कथाकार सूतजी पधारे। उन्हें आया देखकर वहां रहने वाले ऋषि मुनियों ने उनका अभिवादन किया। अभिवादन के बाद सभी ऋषि– मुनि अपने–अपने आसन पर बैठ गए तब उन्हीं में से किसी एक ने सूतजी से कहा–''हे सूत जी ! आप लोक और लोकोत्तर के ज्ञान–ध्यान से परिपूर्ण कथा वाचन में सिद्धहस्त है। हमारा आप से निवेदन है कि आप हमें हमारा मंगल करने वाली कथाएँ सुनायें।'' ऋषि–मुनियों से आदर पाकर सूतजी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा–''आपने जो मुझे आदर दिया है वह सराहनीय है। मैं यहां आप लोगों को परम कल्याणकारी कथा सुनाऊंगा।'' सूतजी ने कहा–''बह्मा, विष्णु, महेश, ब्रह्म के तीन रूप हैं। मैं स्वयं उनकी शरण में रहता हूँ। यद्यपि विष्णु संसार पालक हैं और वह ब्रह्मा की उत्पन्न की गयी सृष्टि का पालन करते हैं। ब्रह्मा ने ही सुर–असुर, प्रजापति तथा अन्य यौनिज और अयौनिज सृष्टि की रचना की है। रुद्र अपने सम्पूर्ण कल्याणकारी कृत्य से सृष्टि के परिवर्तन का आधार प्रस्तुत करते हैं। पहले तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि किस प्रकार प्रजाओं की सृष्टि हुई और फिर उनमें सर्वश्रेष्ठ देव भगवान गणेश का आविर्भाव कैसे हुआ। भगवान ब्रह्मा ने जब सबसे पहले सृष्टि की रचना की तो उनकी प्रजा नियमानुसार पथ में प्रवृत्ति नहीं हुई। वह सब अलिप्त रह गए। इस कारण ब्रह्मा ने सबसे पहले तामसी सृष्टि की, फिर राजसी। फिर भी इच्छित फल प्राप्त नहीं हुआ। जब रजोगुण ने तमोगुण को ढक लिया तो उससे

एक मिथुन की उत्पत्ति हुई। ब्रह्मा के चरण से अधर्म और शोक से इन्सान ने जन्म लिया। ब्रह्मा ने उस मलिन देह को दो भागों में विभक्त कर दिया। एक पुरुष और एक स्त्री। स्त्री का नाम शतरूपा हुआ। उसने स्वयंभू मनु का पति के रूप में वरण किया और उसके साथ रमण करने लगी। रमण करने के कारण ही उसका नाम रति हुआ। फिर ब्रह्मा ने विराट का सृजन किया। तब विराट से वैराज मनु की उत्पत्ति हुई। फिर वैराज मनु और शतरूपा से प्रियव्रत और उत्तानुपात दो पुत्र उत्पन्न हुए और आपूति तथा प्रसूति नाम की दो पुत्रियां हुईं। इन्हीं दो पुत्रियों से सारी प्रजा उत्पन्न हुई। मनु ने प्रसूति को दक्ष के हाथ में सौंप दिया। जो प्राण है, वह दक्ष है और जो संकल्प है, वह मनु है। मनु ने रुचि प्रजापति को आपूति नाम की कन्या भेंट की। फिर इनसे यज्ञ और दक्षिणा नाम की सन्तान हुई। दक्षिणा से बारह पुत्र हुए, जिन्हें यम कहा गया। इनमें श्रद्धा, लक्ष्मी आदि मुख्य हैं। इनसे फिर यह विश्व आगे विकास को प्राप्त हुआ। अधर्म को हिंसा के गर्भ से निर्कति उत्पन्न हुई और अन्निद्ध नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। फिर इसके बाद यह वंश क्रम बढ़ता गया। कुछ समय बाद नीलरोहित, निरुप, प्रजाओं की उत्पत्ति हुई और उन्हें रुद्र नाम से प्रतिष्ठित किया गया। रुद्र ने पहले ही बता दिया था कि यह सब शतरुद्र नाम से विख्यात होंगे। यह सुनकर ब्रह्माजी प्रसन्न हुए और फिर इसके बाद उन्होंने पृथ्वी पर मैथुनी सृष्टि का प्रारम्भ करके शेष प्रजा की सृष्टि बन्द कर दी। सूतजी की बातें सुनकर ऋषि–मुनियों ने कहा, ''आपने हमें जो बताया है उससे हमें बड़ी प्रसन्नता हुई है। आप कृपा करके हमें हमारे पूजनीय देव के विषय में बताइये। जो देवता हमें पूज्य हो और उसकी कृपा से हमारे और आगे आने वाली प्रजाओं के कल्याणकारी कार्य सम्पन्न हों।'' ऋषियों की बात सुनकर सूतजी ने कहा कि ऐसा देव तो केवल एक ही है और वह है महादेव और पार्वती के पुत्र श्री गणेश।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

प्राचीन भारतीय संस्कृति के स्वरूप, इतिहास व उसके विकास–क्रम को जानने में धार्मिक–साहित्यिक ग्रन्थों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इनमें भी पुराणों का विशेष महत्व है। इनमें विषय को सहज, सरल, कथापरक व आख्यान शैली में अभिव्यक्त किया गया है। उच्चकोटि के धर्म व दर्शनमूलक तत्वों को भी सहज व सुग्राह्य शैली में अभिव्यक्ति मिली है। जिस काल विशेष में पुराणों की रचना हुई, उसकाल की संस्कृति, धर्म, आदर्श, मान्यतायें, समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति आदि जीवन के सभी पक्षों को समग्र दृष्टिकोण में समाहित किया गया। इन्हीं विशिष्टताओं के कारण पुराण जनसामान्य में लोकप्रिय हुये। लोकप्रियता के कारण ही उनके माध्यम से सर्वोत्कृष्ट मूल्यों व आदर्शों को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया। यदि हमें भारतीय संस्कृति के विविध पहलुओं को, उसकी समग्रता व व्यापकता के साथ जानना है, तो पुराण से ज्यादा सहयोगी अवयव कोई अन्य नहीं हो सकता।

परम्परा का ज्ञान किसी भी स्तर पर बहुत आवश्यक होता है, क्योंकि परम्परा से अपने को सम्बद्ध करना और तब आधुनिक होकर उससे मुक्त होना बौद्धिक विकास की एक प्रक्रिया है। हमारे पुराण–साहित्य में सृष्टि की उत्पत्ति, विकास–मानव उत्पत्ति और फिर उसके विविध विकासात्मक सोपान इस तरह से दिए गए हैं कि यदि उनसे चमकदार और अतिरिक्त विश्वास के अंश ध्यान में रखे जाएं तो अनेक बातें बहुत कुछ विज्ञानसम्मत भी हो सकती हैं, क्योंकि जहां तक सृष्टि के रहस्य का प्रश्न है विकासवाद के सिद्धान्त के बावजूद और वैज्ञानिक जानकारी के होने पर भी वह अभी तक मनुष्य की बुद्धि के लिए एक चुनौति है और इसलिए जिन बातों का वर्णन सृष्टि के संदर्भ में पुराण–साहित्य में हुआ है उसे एकाएक पूरी तरह से नहीं नकारा जा सकता।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

- गणेश पुराण के साहित्य का अध्ययन करना
- भारतीय संस्कृति में पुराणों के योगदान का अध्ययन करना
- गणेश पुराण के विभिन्न खंडो में साहित्य का अध्ययन करना
- गणेश पुराण का सांस्कृतिक अध्ययन करना

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

गणेश पुराण में पूर्वमध्यकालीन समाज में प्रचलित सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक तत्वों का निरूपण हुआ है। इन विशेष सन्दर्भों में गणेश की आवश्यकता और महत्व को प्रतिपादित किया गया है। गणेश की प्राचीनता को वैदिक परम्परा से जोड़कर उसे तत्कालीन अन्य देवों से श्रेष्ठ और शीर्ष स्थान प्रदान किया गया है।

गणेश पुराण में उल्लिखित सामाजिक परम्पराओं, समाज व काल के अनुसार परिवर्तित हो रही वैदिक मान्यताओं का बोध कराती है। आश्रम व्यवस्था का उल्लेख इसमें प्राप्त होता है, किन्तु इसके प्रति

समाज में प्रतिबद्धता नहीं दिखायी देती। समाज में चातुर्वर्ण्य धारणा व्याप्त थी। ब्राह्मण अपनी तपःशक्ति तथा बौद्धिक उपलब्धियों के कारण विशेष सम्मान पाया हुआ वर्ग था। गाणपत्य धर्म के प्रचार–प्रसार में उसका विशेष योगदान रहा। क्षत्रियों को भी सम्मानप्रद स्थान मिला था। उनका स्थान ब्राह्मणों के बाद का है। वैश्यों और शूद्रों की स्थिति परिवर्तनशील थी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ए बी ब्राउन : 1991 पृ. 95.
2. बेली, : 1995 पीपी. 12, 52–53, 71–72, 89–91।
3. ब्राउन, : 1991 पीपी. 88–92.
4. ए बी बेली, : 1995 पृ. सं., 115.
5. बेली, : 1995 पीपी. 115–117.
6. बेली, : 2008 पीपी.पृ.सं.– 70–78.
7. ए बी थापन, : 1997 पीपी. 30–33.